

-----+++++---++---++-----+++-----

### सतत तथा व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा

1) प्रस्तावना --- मूल्यांकन, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। मूल्यांकन के द्वारा ही उद्देश्यों की पूर्ति के विषय में निर्णय लिए जाते हैं। यह छात्रों को उनकी समझ को बेहतर बनाने में मदद करता है। सतत तथा व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया का उपयोग सिर्फ परीक्षा के अंतिम में ही नहीं बल्कि पूरी प्रक्रिया के दौरान की जाती है! आप लोगों ने देखा था कि मूल्यांकन की भूमिका केवल विषय वस्तु, ज्ञान तथा छात्रों की उपलब्धि को आंकना नहीं है बल्कि उसके संपूर्ण व्यक्तित्व को आंकना है। अतः विद्यालय पाठचर्या के विषय वस्तु के क्षेत्र में ज्ञान को आकलन के अतिरिक्त विद्यार्थी के छात्रों के प्रदर्शन को भी को भी जैसे संगीत, शिल्प, कला, अनुशासन तथा स्वास्थ्य शिक्षा पूरे साल में इत्यादि को भी आकलन करने की व्यवस्था होना चाहिए ताकि विद्यार्थियों का संपूर्ण व्यक्तित्व को सुधारा जा सके। इसी कारण से सतत तथा व्यापक मूल्यांकन का उपयोग से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाया जाने लगा।

2) सतत तथा व्यापक मूल्यांकन का अर्थ --- पूरे वर्ष में बच्चों के ज्ञान को मापने के लिए दो या चार परीक्षाएं दी जाती हैं, जिसके आधार पर उनको ग्रेड तथा अंक दिए जाते हैं। इसी के आधार पर बच्चे अपनी ज्ञान हासिल करने की प्रक्रिया में सुधार लाते हैं। सतत मूल्यांकन से छात्रों के प्रदर्शन में औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों तत्वों की जांच की जाती है। यह प्रक्रिया शिक्षण तथा अधिगम प्रक्रिया के साथ-साथ चलता रहता है। इस कारण से सतत मूल्यांकन का प्रभाव भी अधिक है। छात्रों के प्रदर्शन को मापने के लिए शिक्षक अवलोकन, साक्षात्कार स्वच्छता, सहपाठी आकलन, समूह का अर्थ, योजना आदि विभिन्न तकनीकों का प्रयोग करते हैं। सतत मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य छात्रों को उनके अध्ययन में नियमित रूप से शामिल करना तथा उन्हें अपने अधिगम में अपनी पद्धति को समझने में सहायता करना के साथ साथ उनके गुणों तथा व्यवहारों को मापन ही सतत तथा व्यापक मूल्यांकन कहलाता है। अर्थात् ऐसा मूल्यांकन जो शैक्षिक तथा सह शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति के जांच में लगातार लगा रहता है, वह सतत व व्यापक मूल्यांकन ही है।

यदि शिक्षक चाहता है कि छात्रों के अधिगम व्यवहार तथा गुणों को बेहतर तथा प्रभावी बनाया जाए तो उन्हें अपने परंपरागत शिक्षण अधिगम तथा मूल्यांकन से अलग एक व्यापक योजना बनाना होगा। व्यापक मूल्यांकन का अर्थ होगा कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के मूल्यांकन। इसका अर्थ है केवल किसी विषय संबंधित ज्ञान की जांच करना नहीं बल्कि ज्ञान के क्षेत्रों के अलावा जैसे संगीत, कला स्वास्थ्य, व्यवहारिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा, शांति के लिए शिक्षा तथा जीवन कौशल आदि में भी उसकी सहभागिता को जांचना है। बड़े पैमाने पर छात्रों के विकास की प्रक्रिया शैक्षिक तथा सह शैक्षिक आधार पर जांचने की प्रक्रिया पर आधारित है। विद्यालय में पढ़ने वाले मूलभूत

विषयों पर आधारित गतिविधियां शैक्षिक क्षेत्रों का निर्माण करती है जबकि सह शैक्षिक गतिविधियों के अंतर्गत बौद्धिक अभ्यास से संबंधित तथा जीवन के विभिन्न क्रियाकलापों से जुड़े हुए गतिविधियां आते हैं। सह शैक्षिक के अंतर्गत आने वाले मूल्यांकन के घटक हैं छात्रों के जीवन कौशल का विकास, उनकी अभिवृत्ति, स्वयं की अवधारणा, व्यक्तित्व का निर्माण, रुचि तथा अभिप्रेरणा, सामाजिक तथा संस्कृति के विकास, भावनात्मक बुद्धिमत्ता कला, शिल्प, स्वास्थ्य तथा शारीरिक शिक्षा इत्यादि। शैक्षिक तथा सह शैक्षिक दोनों क्षेत्रों को मिलाकर ही बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है। इसलिए व्यापक मूल्यांकन के तहत शैक्षिक तथा सह शैक्षिक दोनों क्षेत्रों के क्षमताओं का मूल्यांकन करना शामिल है। सह शैक्षिक क्षेत्र में छात्रों के क्षमताओं के मूल्यांकन के लिए विभिन्न उपकरणों तथा गतिविधियों का उपयोग किया जाता है जैसे साक्षात्कार, अवलोकन, व्यक्तित्व परीक्षण, चेक लिस्ट, अभिवृत्ति परीक्षण, निर्धारण मापनी इत्यादि। जैसे उपकरण के उपयोग से छात्रों के सह शैक्षिक क्षेत्र का व्यापक मूल्यांकन किया जाता है उसी तरह उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से शैक्षिक क्षेत्रों का किया जाता है। अतः सतत तथा व्यापक मूल्यांकन में शैक्षिक तथा सह शैक्षिक दोनों क्षेत्रों के छात्रों की क्षमता का मूल्यांकन लगातार उपकरणों तथा तकनीकी के उपयोग के द्वारा किया जाता है। इसलिए सतत तथा व्यापक मूल्यांकन के अंतर्गत इकाई, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक तथा वार्षिक परीक्षाओं के माध्यम से छात्रों की क्षमताओं का सतत मूल्यांकन करना है। यह परीक्षण संज्ञानात्मक, भावात्मक तथा मनोशालक क्षेत्रों पर आधारित होता है। इसमें छात्रों की क्षमताओं का संपूर्ण मूल्यांकन होता है। यह शिक्षक को प्रभावी शिक्षण रणनीतियों को व्यवस्थित करने में सहायता करता है।

3) सतत तथा व्यापक मूल्यांकन के कार्य -- जब शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का विश्लेषण करते हैं तथा उसको प्रभावी बनाने में सतत तथा व्यापक मूल्यांकन की भूमिकाओं की जांच करते हैं तो पाते हैं की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसी आधार पर इसके कार्यों को निम्नवत प्रकार से देखा जा सकता है---

# शिक्षण में प्रभावी शिक्षण रणनीतियों को व्यवस्थित करने में सहायता करता है।

# सतत मूल्यांकन विशिष्ट शैक्षिक तथा सह शैक्षिक क्षेत्रों के संदर्भ में छात्रों की प्रगति के विषय में निरंतर जांच में सहायता प्रदान करता है।

# सतत मूल्यांकन कमजोरियों के निदान के लिए कार्य करता है।

# शिक्षकों को छात्र विशेष की मजबूती तथा कमजोरियों को पता लगाने में सहायता प्रदान करता है।

# यह भी सूचना प्रदान करता है कि निर्णय विशेष में पूरी कक्षा के लिए पुनःशिक्षण की आवश्यकता है या केवल कुछ छात्रों को औपचारिक अनुदेशन की आवश्यकता देनी चाहिए

# बच्चों को उनकी कमजोरी को जानने में मदद करता है तथा उसे स्वयं से सीखने के लिए प्रेरित करता है।

# कक्षा का अध्ययन करता है तथा उनकी गतिविधियों में शामिल होकर अधिगम लक्ष्यों की ओर अधिक आकर्षित करता है।

# यह चरित्र का निर्माण करता है अच्छे-अच्छे मूल्यों का समावेशन भी करता है।

# यह बच्चों को स्व मूल्यांकन उपलब्ध करता है, कि किस प्रकार का अधिगम क्षमता है और कितना इसमें भी सुधार किया जा सकता है।

# यह बच्चों में अच्छी आदतों का निर्माण करता है तथा छात्रों को क्षेत्र के निर्धारण में सहायता करता है, जिस पर अधिक जोर दिए जाने की आवश्यकता है ।

# सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा के रूप में छात्रों की अभिवृत्ति तथा मूल्य पद्धति में बदलाव लाता है।

# छात्रों के क्षेत्रों में प्रगति के विषय में सूचना प्रतिवेदन उपलब्ध कराता है जिससे उसके भविष्य में सफलता का पूर्वानुमान लगाया जा सके !

# भविष्य के विषय में भी निर्णय लेने में सहायता प्रदान करता है।